

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

वैशंपायन उवाच ॥ एतच्छ्रुत्वावचस्तस्य महर्षेर्भावितात्मनः ॥ अमन्यतपुनर्जातमात्मानं सुसुयोधनः ॥ १७ ॥ प्रागेवमंत्रितं चासीत्कर्णदुःशासनादिभिः ॥ याचनीयं मुनेस्तुष्टादिति निश्चित्य दुर्मतिः ॥ १८ ॥ अतिहर्षान्वितो राजन् वरमेनमयाचत ॥ शिष्यैः सह मम ब्रह्मन् यथाजातोऽतिथिर्भवान् ॥ १९ ॥ अस्मत्कुले महाराजो ज्येष्ठः श्रेष्ठो युधिष्ठिरः ॥ वने वसति धर्मात्मा भ्रातृभिः परिवारितः २० ॥ गुणवान् शीलसंपन्नस्तस्य त्वमतिथिर्भव ॥ यदा च राजपुत्री सा सुकुमारी यशस्विनी ॥ २१ ॥ भोजयित्वा द्विजान्सर्वान् पतींश्च वरवर्णिनी ॥ विश्रांता च स्वयं भुक्त्वा सुखासीना भवेद्यदा ॥ २२ ॥ तदा त्वं तत्र गच्छेथायद्यनुग्राह्यतामयि ॥ तथा करिष्ये त्वस्त्रीत्येत्येवमुक्त्वा सुसुयोधनं ॥ २३ ॥ दुर्वासा अपि विप्रेन्द्रो यथागतमगात्ततः ॥ कृतार्थमपि चात्मानं तदामेने सुसुयोधनः ॥ २४ ॥ करेण च करं गृह्य कर्णस्य मुदितो भृशं ॥ कर्णोऽपि भ्रातृसहितमित्युवाच नृपमुदा ॥ २५ ॥ कर्ण उवाच ॥ दिष्ट्या कामः सुसंवृत्तो दिष्ट्या कौरववर्धसे ॥ दिष्ट्या तेश्च वीरमग्नादुस्तेरेव्यसनाणं वै ॥ २६ ॥ दुर्वासाः क्रोधजे वन्हौ पतिताः पांडुनंदनाः ॥ स्वैरेव ते महापापैर्गता वै दुस्तरं तमः ॥ २७ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ इति श्रीमद्भारण्यके पद्मोद्गीतपदीहो दुर्वासोऽप्याख्याने हिषट्यधिकद्विंशततमोऽध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

तत इति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥